Indian Streams Research Journal ISSN 2230-7850
Volume-3, Issue-7, August-2013

मथुरा कि शुंग और कुशाण कला समिक्षा

रमाकांत शिवाजी शातलवार
एम. ए. (इतिहास, राज्यशास्त्र, शिक्षणशास्त्र) बि. एड. नेट (इतिहास)

सारांश:भारत के प्राचीन इतिहास का एक विशेष स्थान है | मथुरा का आदिकालीन सन्निवश यमुना के दक्षिण तट पर हुआ था प्राचीन काल से ही यह नगर भारतीय संस्कृतिक का प्रमुख केंद्र रहा है धर्म, दर्शन, कला भाषा और साहित्य के विकास में मथुरा का बहुत योगदान रहा है | पाणिनी की अष्टाध्यायी में उसका उल्लेख है वाल्मीकि रामायन में मथुरा को मधुपुर का नगर कहा गया यादव प्रकाश के वैजयती कोश मे मथुरा के दो नाम मधुशिका और मधुपहना भी मिलते है |

वाल्मीकि रामायन नया पौराणिक साहित्य से ज्ञात होता है | कि मथुरा नामकरण मधु नामक दैत्य या असुर के कारण हुआ सबसे प्राचीन नगर जो मधु या उसके पुत्र लवण द्वारा बसाया गया वह मधु के नाम पर मधुपुर था मधुपुरी कहलाया

प्रस्तावना :

भारतीय चिन्तनधारा में जब निर्गूण ईश्वर के स्थान पर सगुण को प्रधानता दी गई जैन तथा हिंदू के धर्म के देवी देवताओ को मूर्त रुप प्रदान किया गया प्ररचात बुध्दधर्म में प्रति के विवेचन आगे है द्य प्रतिभा मिठी, काठ, पत्थर, धातु आदि आठ प्रकार कि वस्तुओ से निर्मित होती थी |

कला के केंन्द्र रुप में मथुरा

उत्तरी भारत में मथुरा कला का बहुत बडा केंद्र या उसकी समृध्दी का मुख्य समय पहली शती ईसवी से तिसरी शती विसवा तक था | किन्तु उसके बाद भी लगभग चार सौ वर्षा तक अर्थात चौथी से सातवी शती तक मथुरा के शिल्प वैभव का शुंग बना रहा |

कुशाण युग में शिल्पा कर्म और प्रतिभा –

इस युग में मथुरा कि ख्याती दुर–दुर तक हो गई थी द्य मथुरा के शिल्पिओं की कार्यशालाए जिस वेग से कार्य कर रही थी वह आश्चर्यजनक कि जिनमें से अधिकाश आज भी सुरक्षित है | कुशाण युग में बोधिसत्व बुध्द, नाग,और यक्ष देवतांओ कि विशालकाय मुर्तिर्या के निर्माण द्वारा आगे बढाया गया बाह्य स्थानों के लिए भी मथुरा कि मुर्तियोँ के निर्माण होने लगा द्य सांची, सारनाथ, कौशाम्बी, श्रावस्ती पंजाब, राजस्थान, बंगाल आदिच्छात्रा, एवं कोसम आदि स्थानों में मथुरा के लाल चकतेदार पत्थर मूर्तियों प्राप्त हुई है

मथुरा शिल्प में प्रयुक्त सुन्दर मजिठिया रंग का पत्थर रुपवास और सिकरी की खदानों से लाया जाता था उनके सम्बंध में अनेक प्रतिमाए मुतिर्या स्थापत्य और शिल्प के नमुने मथुरा से विरचित हुए

मथुरा कला का स्वर्णयुग

लगभग ईसवी सन के प्रारंभ से 200 ई तक या सम्राट कनिष्ठ, हुविष्क और वासुदेव का राज्यकाल या जब मथुरा कि कला परम उत्कर्श को कि प्राप्त कई उस युग कि श्रेष्ठता कि तुलना में भारतीय कला के बहूत कम युग देखे जाते है | मथूरा के शिल्पियों ने भरहुत और सांची के आचार्या की बारीक और प्रभावी काम करने की शैली अप जाई किन्तु और भी विकसित किया. परिष्कृत किया है |

मथुरा कला शैली और उसके विषय

स्त्रियों की सुन्दर मुर्तिया गढने मे उन्होंने विशेष रुची दिखाई जैसा वेदिका स्तम्भों से प्रकट है | उनके रूप और आकृतीया बहूत लालित्य है और आभुशण एव वस्त्र का भी न्युनतम प्रयोग किया गया है द्य वेंदिका स्तंम्भो कि से प्रकट है द्य कि शालभजिकांए उ़द्यान किडा और सलिल कीडा कि विविध मुद्राओं में दिखाई गई है | हम मथुरा शालमंजिका कि तुलना इससे पुर्व भरहुत .सांची कि या फिर गांधार कि शालमंजिका ओ से कर तो उनका सादा लावण्य प्रकट हो जाता है उनके कला में धार्मिक एवं सांस्कतिक दुष्यों को पुरी तन्मयता, स्वतन्त्रता और सौन्दर्य से अलकृत कर रहे थे द्य अलंकृत विषयेां तो उनकी मौलिकता और विविधता कि गहरी छाप मज पर पडती है | शिल्पियों कि प्रतिभासे प्रभावित हुए बिना नही रहा जाता भारतीय कला का इतना आधिक सुजानात्मक गुण अन्य किसी भी युग में नही देखा गया| बुध्द प्रतिमा के रूप मे विश्व कला को अपनी सबसे बडी विशेषता प्रकट करके दिखाई उन्होने पहली बार बुध्द को मानव रूप में प्रदर्शित किया | बुध्द कि प्रतिमा मथुरा शिल्पियो कि सबसे उंची मौलिक देन थी | जिसका भारत और विदेशी ने स्वागत किया है द्य ब्राम्हण धर्म मुर्तिया के निर्माण के का श्रेय भी दिया गया है |

भागवत धर्म के प्रभाव से उत्तरी भारत मे था द्य भागवत मुतियां सबसे प्राचीन मुर्तियो मथुरा में मिली है | जिसका परिणाम भक्ति आन्दोलन का प्रारम्भ आरभ मथुरा से हुआ | जैन मुर्ति शिल्प के विषय में भी पुरा प्रय मथुरा को है क्यों कि सबसे प्राचीन जैन प्रतिमाए और स्तुप मथुरा मे ही प्राप्त हुए है | मुति पुजा का प्रचलन सर्वप्रथम जैन धर्म ने ही अपनाया था मयुरा में दो जैन स्तुप थे जैन स्तुप के वास्तविन्यास का स्वरुप लगभग वही थी जो बौध्द स्तुपों का था मथुरा के शिल्पयों ने जैन तिर्थकरों कि अनेक मुर्तिया बनांई, अनेक आरम्भिक रुपो का उन्होने निर्णय किया |

संदर्भ ग्रंथ

भारतीय कलेचा इतिहास	:–	प्रा.श्री. ह. शहाणे
भारत के सांस्कृतिक केंन्द्र मथुरा	:–	प्रा. वेद प्रकाश सोनी
भारतीय कला उदगम आणि विकास	:–	डॉ.वि.य.कुलकर्णी
भारतीय सांस्कृतिक कोश	:–	डॉ. महादेवशास्त्री जोशी